[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3236

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

सुमित्रानंदनपंत के काव्य में प्रकृति–चेतना

मंजु रानी
अदिति महाविद्यालय–बवाना (दिल्ली–विश्वविद्यालय)

पर्यावरण हमारी पृथ्वी पर जीवन का आधार है, जो न केवल मानव अपितु विभिन्न प्रकार के जीव जन्तुओं एवं वनस्पति के उद्‌भव, विकास एवं अस्तित्व का आधार है। सभ्यता के विकास से वर्तमान युग तक मानव ने जो प्रगति की है उसमें पर्यावरण की महती भूमिका है और यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि मानव सभ्यता एवं संस्कृति का विकास मानव पर्यावरण के समानुकूल एवं सामन्जस्य का परिणाम हैं यही कारण है कि अनेक प्राचीन सभ्यतायें प्रतिकूल पर्यावरण के कारण काल के गर्त में समा गई तथा अनेक जीवों एवं पादप समूहों की प्रजातियाँ विलुप्त हो गयी और अनेक पर यह संकट गहराता जा रहा है।

वास्तव में पर्यावरण कोई एक तत्व नहीं है अपितु अनेक तत्वों का समूह है और ये सभी तत्व अथवा घटक एक प्राकृतिक सन्तुलन की स्थिति में रहते हुए एक ऐसे वातावरण का निर्माण करते है जिसमें मानव, जीव–जन्तु, वनस्पति आदि का विकास अनवरत चलता रहे। किन्तु यदि इनमें से किसी एक भी तत्व में कमी आ जाती है अथवा उसकी प्राकृतिक क्रिया में अवरोध आ जाता है तो उसका बुरा प्रभाव दूसरे तत्वों पर भी पड़ता है, जिससे एक नई विषम परिस्थिति का जन्म होता है। इस विषमता से जलवायु, वनस्पति, जीव जन्तु एवं मानव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जो जीव जगत के अस्तित्व के लिये संकट का कारण बन जाता है। मानव और प्रकृति का चिर संबंध है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी मानव का प्राथमिक संबंध प्रकृति से ही रहा है। वैदिक वांगमय का अनुशीलन इस बात का साक्षी है कि उस काल के ट्टषि, मुनियों की विराट् चेतना सत्ता के स्तवन प्रसंग में उषा, सविता, वरूण, चन्द्र आदि प्रकृति–तत्त्वों का प्रचुर प्रमाण में वर्णन किया गया है।

काव्य मानव जीवन की अभिव्यक्ति होने के कारण स्वभावतः प्रकृति से जुड़ जाता है। इसी कारण विश्व के सभी महान कवियों की रचना का अधिकांश भाग प्रकृति की गोद में बैठकर लिखा गया है। कविवर सुमित्रानंद पंत के विषय में भी यही कहा जा सकता हैं पंत की काव्य प्रेरणा तथा वर्णन विषय प्रकृति ही रही है। उनका प्रथम विषय है प्रकृति और गौण विषय है मानव।

उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए लिखा है– ''कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचलप्रदेश को है। प्रकृति के साहचर्य ने जहाँ एक ओर मुझे सौंदर्य, स्वपन और कल्पना जीवी बनाया है वहाँ दूसरी ओर जनभीरू भी बना दिया।''[1] पंत के वैयक्तिक जीवन में कितना भी अन्तर आया हो परन्तु प्रकृति का साथ उन्होंने नहीं छोड़ा।

प्रकृति कवि के लिये एक ओर माँ है तो साथ ही सुकोमल प्रेयसी भी। पंत माँ के नैसर्गिक सुख से वंचित रहे, अतः उन्होंने इस सुख की क्षतिपूर्ति प्रकृति से की हैः–

माँ मेरे जीवन की हार,
तेरा उज्ज्वल हृदयहार हो अश्रुकणों का यह उपहार (वीणा)

यदि हम प्रकृति और अपने आस–पास के वातावरण से भावनात्मक रूप से जुड़ते है तो वह भी हमारे सुख दुख की सहभागी होती है। 'गुंजन' की कविताओं में कवि ने प्रकृति को अपनी भावनाओं के अनुरूप प्रस्तुत किया है।

पंत जी ने अपने आदर्शों की स्थापना प्रकृति के उदाहरण देकर करते है। हंसते फूलों को देखकर कवि मानव–जीवन की प्रसन्नता की ओर संकेत करता है।

'नौका विहार' में धारा के निरन्तर प्रवाह में उसे जीवन की शाश्वत गति के दर्शन होते हैः–

इस धारा सा ही जग का क्रम
शाश्वत इस जीवन का उद्गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम
शाश्वत नभ का नीला विकास।

'बादल' कविता पढ़कर यह मानना पड़ता है कि कवि पंत ने प्रकृति के रूप को निकट से ही नहीं देखा, अपितु उसका चित्रण करने में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार– ''बादल कविता में अद्भुत या विलक्षण कल्पना के दर्शन होते है[2] कवि ने बादल के माध्यम से पौराणिक मान्यताओं, प्राकृतिक सौंदर्य की स्वाभाविकता, मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति तथा कर्त्तव्य पथ की कठोरता आदि भावों को जिस रूप में प्रस्तुत किया है वह कवि की सफलता का प्रमाण है।

'ज्योति भारत' नामक कविता में पंतजी ने भारत–भूमि के प्राकृतिक सौंदर्य का गुणगान करते हुए यह स्पष्ट किया है कि मानव, परिवार और समाज जीवन को भी इसी, प्रकृति ने जन्म दिया। प्राकृतिक सौंदर्य सुषमा की दृष्टि से भी भारत भूमि विश्व की सिरमौर है। यहाँ गंगा–यमुना जैसी पावन नदियां प्रवाहित होती है। इसी की गोद में ज्ञान और भक्ति योग का उदय और विकास हुआ था।

'हिमाद्रि' कविता में एक ओर तो हिमालय के दिव्याति दिव्य सौंदर्य का वर्णन किया गया है तो दूसरी ओर उसकी विराट और महत्वपूर्ण अस्मिता का वर्णन किया गया है साथ ही मानव–जीवन पर प्रकृति प्रभावों का भी सुस्पष्ट उल्लेख किया गया है।

मानव को आध्यात्मिक चेतना का आभास भी प्रकृति ही कराती है। इसका वर्णन कवि पंत ने अपनी कविता 'वार्धक्य' में किया है। प्रभातकाल में ध्वनित होने वाले पक्षियों के कलरव में व्यक्ति को लोक चेतना के जागृत होने का आभास होता है संध्याकाल में जब कमलों की पंखुडियों सिमटकर झुक जाती है उसमें ही मानव की भक्ति भावना तथा आत्मसमर्पण का संकेत मिलता है। रात्रि के समय असंख्य तारों से भरा हुआ आकाश नीरव, शान्त और मौन दिखायी देता हैं ब्रह्मांड का सौंदर्य और दिगन्त व्यापी शांति उस चिरन्तन शांति का संकेत करती है

स्वयं कवि के शब्दों में ''प्राकृतिक चित्र में प्रायः मैंने अपनी भावनाओं का सौंदर्य मिलाकर उन्हें ऐंद्रिय चित्राण बनाया है। कभी–कभी भावनाओं को ही प्राकृतिक सौंदर्य का लिबास पहना दिया है। एक तारा कविता इसी कोटि की कविता है।''[3]

सांध्यकालीन वातावरण की सृष्टि करके कवि ने 'एकतारा' को ज्योतित विवेक, योगी, मुक्त पुरूष और निरन्तर साधना में लीन रहने वाला ऐसा साधक बताया है जो अन्तोतगत्वा सामरस्य प्राप्त कर लेता है।

पृथ्वी पर नदियों की एक अलग ही छटा देखने को मिलती है। पर्यावरण को शुद्ध रखने में जितना सहयोग पेड़–पौधे करते है उतना ही नदियाँ भी करती है। प्राचीन काल से ही ट्टषि–मुनियों ने नदियों के किनारे जंगलों और पहाड़ों में अपनी कुटियाएं बनाई यहाँ तक कि शिक्षा प्रापत करने के लिए आने वाले विद्यार्थियों के लिए गुरूकुल भी ऐसे ही शांत वातावरण में बनवाये। इसका एक ही मुख्य कारण था कि मन प्रसन्नचित्त और शांत रहे। ऐसे सुखद वातावरण में शिक्षार्थी और तपस्वी दोनों ही अपने लक्ष्य को शांतिपूर्वक प्राप्त कर लेते हैं।

पंत कवि ने भी अपनी कविता 'गंगा' में उसके प्राकृतिक सौंदर्य के साथ–साथ उसकी महत्ता का भी वर्णन किया है। ये अपनी चंचल और सुंदर लहरों से सदा प्रवाहित रहती है। गंगा भारतीय इतिहास, समाज, धर्म, संस्कृति, जीवन पद्धति, औद्योगिक तथा आर्थिक जीवन की मूतिमन्त प्रतिमा है।यह स्वर्ग की भी गंगा है। गंगा ने ही कपिल मुनि के शाप से मृत महाराज सगर के 60 हजार पुत्रों को मोक्ष दिया।

कहने का तात्पर्य है कि यदि हम अपनी प्रकृति का उसके सौंदर्य और स्वच्छता का ध्यान रखेंगे तो निश्चित रूप से ही ये हमें हमारे जीवन जीने में सहायता प्रदान करेंगी। इसका वर्णन भी कविवर पंत ने अपनी कविता 'अणु विस्फोट' में किया है। अणु–विस्फोट से मानव और उसकी सम्पदा देखते–देखते भस्म हो गयी।

अणुशक्ति के राक्षसी रूप से जूझने के लिए उस समय भी मानव ने प्राकृतिक शक्तियों का सार–ग्रहण कर लिया था। मनुष्य की तत्परता और कर्मठता के कारण प्राकृतिक तत्वों ने अपना अपराजित बल मानव मन में

भर दिया। उसने देखा की नाश के कारण निरीह और आत्मविस्मृत से पड़े हुए मनुष्यों में वायु अपना प्रबल वेग भर रहा था। सागर का अनन्त विस्तार और गांभीर्य मानव के वक्षस्थल को विशाल शक्तिशाली तथा सहिष्णु बना रहा था। निरन्तर उपर उठने वाली अग्नि जीवन में व्याप्त दुर्बलताओं, अभावों और रूढ़िवाद के कीचड़ को जलाकर जीवन को शुद्ध, मुक्त एवं उर्ध्वगामी बना रही था।

पंत जी ने अपनी अन्य अनेक कविताओं जैसे प्रथम रश्मि, ग्रंथि, गिरि प्रान्तर, अल्मोडे का बसन्त आदि में भी प्रकृति का सुन्दर वर्णन किया है सभी ट्टतुओं में सर्वोपरि मानी जाने वाली वसन्त ट्टतु का वर्णन करते हुए पंत जी का कहना है कि – ''रितुराज वसन्त का आगमन सुनकर विश्व की सभी इच्छाएं, कामनाएं अथवा आकांक्षाए अनेक कोमल फूलों में खिल उठी थी। फूलों के खिलने में। फूलों के खिलने में पृथ्वी वासी सभी लोगों की इच्छांए इस प्रकार व्यक्त हो रही थी मानों संसार का ईश्वर उन्हें सफल बना दें।''

इस लेख से यह स्पष्ट है कि प्रकृति किसी न रूप में हर समय मानव जाति को कुछ न कुछ देती ही रहती है। संसाधन प्राकृतिक, सांस्कृतिक या मानवीय कोई भी हो सकता है, किन्तु उसका आवश्यक गुण है–कार्यात्मकता, जिसमें उसकी उपयोगिता निहित है। जिमरसेन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'वर्ल्ड रिसोर्सेज एंड इण्डस्ट्रीज' में लिखा है– "The Word Resource Does not refer to a thing as substance but to a funetion which a thing or a substance may perform as to an opration in which it may take part"[4] अर्थात् संसाधन वस्तु या पदार्थन होकर एक क्रिया है जिसके माध्यम से उस पदार्थ की उपयोगिता संभव होती है। वास्तव में प्राकृतिक वातावरण नामक तत्व संसाधम तभी बन सकता है। जबकि मनुष्य न केवल उसकी उपयोगिता समझता है अपितु उसका उपयोग भी करता है।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि प्रकृति और मानव सदा से ही एक दूसरे के पूरक है। इनमें एक सहज संबंध है। क्योंकि प्रकृति मनुष्यों को वे सब संसाधन देती है जो उनके जीवन का आधार है।

संदर्भ

1. *कविवर सुमित्रानंदन पंत और उनका रशिमबंध डॉ. कृष्णदेव शर्मा पृ. 36*
2. *हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेंद्र पृ. 520*
3. *कविवर सुमित्रानंदन पंत और उनका रशिमबंध डॉ. कृष्णदेव शर्मा पृ. 218–219*
4. *Word resources and Industries, 1951. page-7 Zimmer mann. E.W.*